सामान्य ज्ञान दर्पण

अक्टूबर 2018

वर्ष 31 तृतीय अंक

इस अंक में...

7 हर बेटे के लिए सीख.....

विशेष स्तम्भ

8 समसामयिक सामान्य ज्ञान

13 आर्थिक परिदृश्य

17 राष्ट्रीय परिदृश्य

23 अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य

29 क्रीड़ा जगत्

31 विज्ञान समाचार

35 समसामयिक महत्वपूर्ण तथ्य

36 अनुप्रेरक युवा प्रतिभाएं

38 सारभूत तत्व कोष

लेख

42 सामाजिक लेख—हैदराबाद के श्रीरंगनाथन मंदिर में 2700 साल पुरानी परम्परा तोड़ी : दलितों का मंदिरों में सम्मानजनक प्रवेश

43 पशुधन लेख—पशुपालन क्षेत्र में वृद्धि एवं विकास के प्रयास: एक दृष्टि में

45 पर्यावरण लेख—लाल वर्षा

46 बैंकिंग लेख—बैंकिंग के बदलते परिवेश में भुगतान बैंकों की भूमिका

48 द्विपक्षीय सम्बन्ध लेख—मंगोलिया के लिए भारतीय सौगात पहली तेल रिफायनरी

हल प्रश्न-पत्र

49 उत्तर प्रदेश शिक्षक पात्रता परीक्षा, 2017 (द्वितीय प्रश्न-पत्र)

61 उत्तर प्रदेश पुलिस कॉंस्टेबिल भर्ती परीक्षा, 2018

71 छत्तीसगढ़ संयुक्त सीधी भर्ती परीक्षा, 2018 (शीघ्रलेखक, डाटा एण्ट्री ऑपरेटर, सहायक ग्रेड-3, स्टेनो-टायपिस्ट पदों के लिए)

83 आगामी उत्तराखण्ड वन आरक्षी पदों की भर्ती परीक्षा, 2018 हेतु विशेष हल प्रश्न

88 आगामी बिहार पुलिस सिपाही/फायरमैन पदों की भर्ती परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न

90 आगामीरेलवे सहायक लोको पायलट, तकनीशियन कम्प्यूटर आधारित परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न

94 आगामी रेलवे भर्ती बोर्ड ग्रुप- 'डी' कम्प्यूटर आधारित परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न

101 आगामी रेलवे भर्ती बोर्ड आर.पी.एफ./आर.पी.एस.एफ. कॉंस्टेबिल भर्ती परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न

109 एस.एस.सी. द्वारा आयोजित केन्द्रीय सशस्त्र पुलिस बलों में कॉंस्टेबिलों की भर्ती परीक्षा, 2018 हेतु विशेष हल प्रश्न

विविध/सामान्य

115 विविध जानकारी—भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन-कालीन प्रमुख संस्थाएं

116 सामान्य जानकारी—उर्वरक, रसायन एवं पेट्रो-रसायन के क्षेत्र में अनुसंधान एवं विकास के बढ़ते चरण : एक दृष्टि में

119 ज्ञान वृद्धि कीजिए

121 रोजगार समाचार

सामान्य ज्ञान दर्पण में प्रकाशित किसी भी सामग्री अथवा चित्र के लिए सम्पादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है. **-सम्पादक**

• **E-mail :** publisher@pdgroup.in • **Website :** www.pdgroup.in

हर बेटे के लिए सीख...

—साध्वी वैभवश्री 'आत्मा'

यूँ तो हर उम्र के व्यक्ति को सतत् कुछ-न-कुछ सीखते ही रहना चाहिए, किन्तु कुछ सीखें ऐसी होती हैं, जो आदमी को जीने की शैली पूरी ही बदल डालती हैं. हमारा छोटासा कृत्य भी अनेक लोगों को जीने के प्रति एक सुन्दर मार्गदर्शन कर सकता है.

एक बार की बात है एक बेटा अपने वृद्ध पिता को रात्रिकालीन भोजन (supper) के लिए एक अच्छे रेस्टारेंट में लेकर गया. खाने के दौरान वृद्ध पिता ने कई बार भोजन अपने कपड़ों पर गिराया. रेस्टारेंट में बैठे दूसरे खाना खा रहे लोग उस बुर्जुग व्यक्ति को देख नाक-भौं भी सिकोड़ने लगे. उनके चेहरों पर उस बुर्जुग की हरकतों को देखकर खीज झलक रही थी, किन्तु उस वृद्ध का बेटा शान्त था. वह अपने पिता को बहुत शान्ति से खाना खिला रहा था. उसने पिता को खिलाने के बाद खुद का खाना पूरा किया और बिना किसी शर्म या लिहाज के अपने पिता को वॉशरूप में ले गया. उनके कपड़े साफ किए, चेहरा साफ किया, बालों में कंघी की, चश्मा पहनाया और फिर अपने कंधे का सहारा देकर उन्हें बाहर लाया. रेस्टारेंट में हर एक व्यक्ति की नजर उस वृद्ध पर और उसके सुन्दर आकर्षक युवा पुत्र पर ही टिकी थी. सभी लोग खामोशी से उन्हें ही देखे जा रहे थे. बेटे ने बिल का भुगतान किया और अपने पिता के साथ बाहर जाने लगा. तभी डिनर कर रहे एक अन्य वृद्ध व्यक्ति ने उस युवक को आवाज दी और उससे पूछा क्या तुम्हें नहीं लगता कि यहाँ अपने पीछे तुम कुछ छोड़कर जा रहे हो ? बेटे ने कहा—नहीं सर ! मैं कुछ भी छोड़कर नहीं जा रहा हूँ. वे बुर्जुग बोले—बेटे, तुम यहाँ छोड़ कर जा रहे हो, प्रत्येक पुत्र के लिए एक सीख और प्रत्येक पिता के लिए उम्मीद.

आमतौर पर आज की युवा पीढ़ी अपने बुर्जुग माता-पिता को अपने साथ लेकर जाना पसन्द नहीं करती, ना ही उनके साथ स्वयं कहीं जाना चाहती है. अक्सर बच्चे यही कहते हैं कि आप हमारे साथ चलकर क्या करेंगे ? आप से चला तो जाता नहीं. ठीक से खाया भी नहीं जाता. आप घर पर रहो, वो ही अच्छा है, किन्तु वे युवक ऐसा कहते हुए भूल जाते हैं कि उनके माता-पिता जब युवा थे, आप नन्हे मुन्ने थे, तब आप भी ठीक से नहीं चल सकते थे, ठीक से खा नहीं सकते थे, माँ-पिता खुद अपने हाथों से आपको खाना खिलाया करते थे, आपकी शैतानी हरकतों को सँभाला करते थे. वे कभी ऐसा नहीं सोचते थे कि ये बेटा हमारे वस्त्रों को गन्दा कर देगा तो ? अन्य लोगों में इज्जत खराब कर देगा तो ? इसे किसी अन्य के सहारे छोड़ दूँ. जैसे आपके बचपन में माता-पिता आपका ख्याल रखते रहे हैं, आज वे वृद्ध हो गए हैं, तो आप उनकी पूरी देखभाल करने से क्यों कतराते हैं ? और फिर किसी दिन आपको भी तो वृद्ध होना ही है. आपको अपना भविष्य भी उनके माध्यम से देख लेना चाहिए. जीवन का दर्शन हर उम्र में कैसा हो ? हरेक के प्रति हमारी बोल-चाल व्यवहार कैसा हो हमारी भावनाएँ प्रत्येक आयु वर्ग के लोगों के प्रति कैसी हो यह शिक्षा आज के युग में अगर सही तरीके से दी जाए, तो सम्भव है, हम मानवता के पुष्प महका सकें. अन्यथा व्यक्तिवादिता, स्वार्थपरता, सीमित दृष्टिकोण और इंसानियत के बदले भौतिक सुविधा भोग की आदतन गुलामी हमारी युवा पीढ़ी को किस कदर प्रदूषित कर चुकी है, वह कथा बयां करने की आवश्यकता भी नहीं बची.